Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यों में मार्क्सवाद की झलक

('लहरीदशकम्' के विशेष सन्दर्भ में)

रवीन्द्र कुमार पंथ
शोधच्छात्र, संस्कृत–विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number: 81-87
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

सारांश – आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी कार्ल मार्क्स के समान श्रमिक वर्ग के पक्षधर हैं तथा उन्हें सम्यक् शोषणविहीन स्थिति में लाना चाहते हैं उनके अनुसार देश में समाजवाद के नाम पर पूंजीवादी का बोलबाल जनता के साथ हो रहा छलावा है जो देश के लिए घातक है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मार्क्स वाद के विभिन्न सिद्धान्त आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के काव्यों में व्यापक रूप से दृष्टिगोचर होता है।

मुख्य शब्द – आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, कार्ल मार्क्स, श्रमिक वर्ग, समाजवाद, काव्य।

बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी में सन्धिकाल के आस–पास जिन कवियों नें साहित्य को समृद्ध किया है उनमें आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ परिगणित होता है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी संस्कृत जगत् में जनवादी कवि, प्रखर चिंतक, आधुनिक रचनाधर्मिता के मानदंड एवं नीर–क्षीर–विवेक कवि के रूप में विख्यात् हैं। इनका जन्म मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में 15 फरवरी 1949 ई. को हुआ था। सागर विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के कुछ समय पश्चात् ही आचार्य त्रिपाठी जी की नियुक्ति मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता पद पर हुआ। जहाँ 18 अगस्त 1971 को कार्यभार ग्रहण करने के अनन्तर उन्होंने अपना आध्यापकीय जीवन प्रारम्भ किया। कुछ समय बाद सागर विश्वविद्यालय में नियुक्त हो जाने के कारण 3 फरवरी 1973 को उन्होंने उदयपुर छोड़ दिया और सागर चले आये। सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में व्याख्याता के रूप में 1978 तक कार्य करने के अनन्तर 1979 को इस विभाग में प्रवाचक पद पर उनकी नियुक्ति हुई और 23 अप्रैल 1983 को वे इसी विभाग में अचार्य पद के लिये चुने गये। आचार्य त्रिपाठी जी ने अनेक विदेश यात्राएँ भी की है। 1987 में उन्होंने हुम्बोल विश्वविद्यालय में उन्होंने ढाई महीने व्याख्यान भी दिये। लाइडन

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

(हॉलैन्ड) में आयोजित सप्तम विश्व संस्कृत सम्मेलन में सागर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व भी किया। वियाना में आयोजित अष्टम विश्व संस्कृत सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता की। जनवरी 2002 से तीन वर्ष तक सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय में अभ्यागत आचार्य के रूप में कार्य किया। 2008 से 2013 तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के कुलपति के पद को अलंकृत किया। 28 फरवरी 2014 को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुए। आचार्य त्रिपाठी जी अपनी कृतियों पर विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं जिनमें प्रमुख हैं– केन्द्रिय साहित्य अकादमी पुरस्कार, श्रेष्ठ दार्शनिक लेखन के लिए शंकर पुरस्कार, कनाडा का रामकृष्ण संस्कृति सम्मान, यू.जी.सी. का वेदव्यास सम्मान, महाराष्ट्र शासन का जीवन व्रती संस्कृत सम्मान आदि उल्लेख्य है।

19वीं शताब्दी में जर्मनी में जन्में दो महान विचारक कार्लमार्क्स और फ्रेडरिक ऐंगेल्स की संयुक्त विचारधारा को मार्क्सवाद कहा जाता है। दोनों ने मिलकर दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र व राजनीति शास्त्र की विविध समस्याओं पर अत्यन्त गम्भीर व विशद विचार किया था। उन्होंने इन सभी समस्याओं के सम्बन्ध में एक सुनिश्चित विचार सम्प्रदाय संसार के सम्मुख रखा था, उसी विचारधारा को हम मार्क्सवाद कहतें हैं। इस विचारधारा का उदय तब हुआ जब औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग का अन्त और मशीनी कारखानों का उदय हुआ। समाज दो भागों में विभक्त हो गया– श्रमिक वर्ग और पूंजीपती वर्ग। पूंजीपती वर्ग कम से कम वेतन देकर श्रमिक वर्ग से काम लेता था। जिससे श्रमिक वर्ग निरन्तर निर्धन होता गया और पूंजीपती सम्पन्न। व्यक्तिवाद की भावना पनप रही थी, जो पूंजीपतियों के लिए लाभदायक और श्रमिकों के लिए कष्टप्रद थी। सुधार की मांग के वातावरण की स्थिति में उन विचारकों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने व्यक्तिवाद के विरुद्ध प्रतिक्रियाजन्य विचारों की अभिव्यक्ति की इन विचारकों ने औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था की कड़ी आलोचना की। किन्तु उन्होंने विषमता के कारणों पर ध्यान नहीं दिया और न ही तत्कालीन वैज्ञानिक समस्या का अध्ययन किया। इस तत्कालिक समस्या पर सर्वप्रथम कार्ल मार्क्स ने ही वैज्ञानिक अध्ययन किया तथा वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त की स्थापना की। समाजवाद का आशय है– समाज स्वामी हो। राज्य की सम्पूर्ण शक्ति और अधिकार जब समाज के पास हो तब समाजवाद की स्थापना हो सकती है। इस समाजवादी व्यवस्था से पूंजीवादी व्यवस्था के सब दोष दूर हो जायेंगे, तभी आर्थिक व्यवस्था की वह दशा आयेगी जिसे कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद की संज्ञा दी है।[प] समाजवाद एक साधन के रूप में साध्य साम्यवाद की प्राप्ति करता है। साम्यवाद की स्थापना मार्क्स वाद का प्रमुख उद्देश्य है।

मार्क्सवाद की मान्यता है कि साम्यवादी व्यवस्था के अतिरिक्त प्रत्येक अवस्था में दो ऐसे वर्गों का अस्तित्व होता है जो परस्पर विरोधी होते हैं। उन दोनों वर्गों में सदैव संघर्ष होता है। यही वर्ग–संघर्ष की अवधारणा है।[पप]

मार्क्सवाद का एक अन्य सिद्धान्त भौतिकवाद है। इसे मार्क्स द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की संज्ञा देते हैं। भौतिकवाद के अनुसार विश्व में पदार्थ मूल तत्त्व हैं तथा विश्व की वस्तुएं, चेतना, मन, विचार आदि भी उसी से उत्पन्न हुए हैं।[पपप] भौतिकवाद विश्व की उत्पत्ति विश्वात्मा, ईश्वर, सार्वभौम चेतना आदि से नहीं मानता है।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के काव्यों में मार्क्सवाद के विभिन्न तत्त्वों की झलक दिखाई देती है जो निम्नलिखित है–

(1) समाजवाद और साम्यवाद–

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के काव्यों में समाजवाद और साम्य वाद के सिद्धान्तों की झलक नजर आती है। उनके काव्यों में शोषित वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के प्रति उनकी संवेदनाएँ देखी जा सकती हैं। कवि का अभीष्ट और मार्क्सवाद का अभीष्ट श्रमिक वर्ग को शोषणविहीन स्थिति में लाना है। वह मजदूर वर्ग को प्रसन्न देखना चाहता है, इसीलिए वह कृष्णमेघ की शुभ छाया से रक्षा की कामना करता है जो खेत में काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर को अह्लादित करती है–

क्षेत्रे कार्यरतांश्च पामरजनानाह्लादयन्ती शुभा
छाया साऽऽतमपदुस्सहेऽत्र दिवसे कृष्णाम्बुदस्यायता।[पअ]

यहाँ पर कवि की भावना मार्क्सवाद से प्रभावित नजर आती है। उनकी कविताओं में श्रमिक वर्ग की दुर्दशा का भावपूर्ण वर्णन देखने को मिलता है। कवि इस दूर्दशा से दुःखी है, क्योंकि वह जनता का कल्याण चाहता है। कवि का विचार है कि संसार में कई व्यक्ति भक्ति परयण होकर स्तोत्रों से देवताओं की अर्चना करते हैं, कोई चाटूकारिता में निरत होकर दुष्ट, चंचल मति वाले नेताओं और धनी स्वामियों की स्तुति करते हैं। किन्तु उनके लिए स्वभाव से ही स्थिति, लय और आविर्भाव की हेतु तथा योगक्षेम को करने वाली राष्ट्र की जनता है। वे जनता का ही शासन चाहते हैं। इसीलिए जनता की ही स्तुति करते हैं–

केचित् भक्तिपरायणा भवभयादर्चन्ति देवांस्तवैः
केचिच्चाटुरताः खलांश्चलधियो नेतृन् प्रभूञ्छ्रीमतः।
अस्माकं तु निसर्गतः स्थितिलयाविर्भावहेतुः परं
योगक्षेमविधायिनीह जनता राष्ट्रस्य सा स्तूयते।।[अ]

कवि जहाँ–जहाँ पीड़ित मजदूर वर्ग, शोषित वर्ग का वर्णन करता है, उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त करता है, और यह आशा व्यक्त करता है कि ये वर्ग शोषण विहीन होंगे , वहाँ–वहाँ कवि की समाजवाद की भावना उद्घाटित होती है। विभिन्न कवियों के द्वारा अपनी कृतियों को किसी उपकृत व्यक्तियों के लिए समर्पित किया गया, किन्तु वसन्तलहरी में कवि की उदार भावना के दर्शन होते हैं। वे अपनी कृति को दीन जनों को समर्पित करते हैं। उनका कहना है कि वे अपनी वाणी के विस्तार की सफलता तब ही मानते हैं जब यह वसन्तलहरी दीन जनों के लेश–मात्र भी क्लेश को मिटा सके–

सैषा वसन्तलहरी प्रभवेत् प्रमार्ष्टुं क्लेशस्य लेशमपि दीनजनस्य जातु।
साफल्यमस्य निजवाडिनचयस्य मन्ये तस्मै जनाय रचनां च समर्पये स्वाम्।।[अप]

कवि अपनी कविताओं में नेताओं और धनिकों के गीत नहीं गाता है। वह किसी की स्तुति नहीं करता है। वह अपने शब्दों में महीन मलमल नहीं बुनता, नकली फूलों के समान किन्हीं शब्दों से विचित्र सुन्दर माला नहीं गूंथता, कवि के मानस में सहज विभावित गुण वाली जनता आसीन है। निश्चित रूप से वही कवि के भीतर से वाणी के द्वारा अपने आपकों व्यक्त करती है।[अपप] कवि जनता के लिए न्यौछावर है। वे जनता में उन श्रमिक वर्ग, वैभवहीन वर्तमान के नेताओं ने लम्बे समय से शोषण किया

है, की बात करता है। कति सामन्तवाद का भी अन्त करना चाहता है, क्योंकि सामन्तवाद ने गरीब किसानों का अत्यन्त शोषण किया है। कवि प्रावृङलहरी में संकेत के माध्यम से कहता है कि मेघ का पर्दा हटाकर सूर्य समय देख रहा है। किसान की उन्नति करने वाला समय और सामन्त का अन्त करने वाला समय–

पटं मेघस्य संहृत्य रविः समयमीक्षते।
कर्षकस्योन्नतिकरं सामन्तस्य कृतेऽन्तकम्।।[अपपप]

कवि रोटी को अपने काव्य का विषय बनाते हुए रोटिकालहरी में दीन–दूःखी श्रमिक वर्गों को रोटी से अमृत तत्त्व की प्राप्ति बताते हैं। वे कहते हैं– सृष्टि के दुःख, श्रम और क्लेश के नागों से जो बेचारा लगातार डसा जा रहा है रोटी चुटकी बजाकर जीवन का अमृत दे देती है।[पग] रोटी के लिए गरीबों को क्या–क्या सहना पड़ता है कवि उन मार्मिक भावनाओं का वर्णन करता है कि वैभवविहीन लोग कोड़े की सटसटाहत के नितम्ब पर पड़ते जो कठोर प्रहार सहते हैं, मुख से आर्त शब्द नहीं निकलता आंसू के साथ पीड़ा को पी लेते हैं। मनुष्य अपनी शब्दराशि का विक्रय कर देते हैं। वे अपनी ही आत्मा को गिरवी रख देते तथा हालाहल को भी जीवन का अमृत मानकर पी लेते हैं।[ग]

कवि समाज का झूठा मुखौटा लगाकर जनता को ठगने वालों से सन्तुष्ट नहीं होते हैं क्योंकि वे केवल समाजवाद के झूठे नारे लगाते हैं और समाजवाद के नाम पर अपनी जेबों को भरते हैं। इसी दुःख को व्यक्त करते हुए कवि कहता है कि देश आगे जा रहा है, जनता पीछे खीची जा रही है। यह कैसा समाजवाद है? यह कैसी प्रगति है? कवि राष्ट्र में सच्चे समाजवाद को स्थापित करना चाहता है–

गच्छति पूरतो देशः पुनरिह पश्चात् प्रधृष्यते जनता।
कोऽयं समाजवादः प्रगतिर्वा कीदृशी सेयम्।।[गप]

कवि जनता की इस दुःखमयी स्थिति को देखकर अंततः साम्यवाद की स्थापना करना चाहता है। जिसमें ऐसा स्वराज्य देश प्रतिष्ठित हो जहाँ सभी लोगों का साम्य की दृष्टि से देख जा सके–'

साम्यालोचनलोकनेन निखिलैर्लोकेरिदं लोकितं।
स्वराज्यं च जनेषुदत्तविभवं तद् भारते भ्राजताम्।।[गपप]

इस प्रकार त्रिपाठी की के काव्यों में समाजवाद तथा साम्यवाद की स्पष्ट झलक दिखायी देती है।

(2) भौतिकवाद–

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यों में भौतिकवाद का सिद्धान्त भी देखने को मिलता है। पुरानी परम्पराओं, धर्म की रूढ़ियों, दर्शन की परम्पराओं को नहीं मानते बल्कि उनके अनुसार विश्व का मूल पंचतत्त्व से निर्मित जनता है। वे जनता को ही स्थिति लय और अविर्भाव को ही हेतु मानते हैं।[गपपप] कवि की रुचि षडदर्शनों में नहीं है। वे कहते हैं कि अक्षपाद गौतम के द्वारा कहे गये न्याय दर्शन में उनकी मति नहीं है और न ही महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन में है। कर्मकाण्ड के कारण जटिल मीमांसा भी नहीं भाता और बौद्ध दर्शन के निर्वाण को तो वे गुण विहीन कहते हैं।[गपअ] 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या' को चरितार्थ करने वाले वेदान्त दर्शन में वर्णित ब्रह्म के विषय में कवि की अवधारणा है कि उस ब्रह्म की प्राप्ति से क्या लाभ? संसार के विच्छेद से उत्पन्न ब्रह्मानन्दरस को पा लेने से भी क्या?–

वेदान्तेषु यमाहृरेकपुरुषं तत्प्राप्तिलाभेन किं

ब्रह्मानन्दरसेऽपि किं ह्यधिगते संसारविच्छेदजे।
वैषम्याहितभीतिसङ्कुलमिदं चालोक्य लोकं मनो
नो कारुण्यसमाकुलं यदि न वा जातं व्यथान्दोलितम्।।[गअ]

कवि आदर्शवाद, अध्यात्मवाद के पारम्परिक ढाचों में नहीं बधें हुए हैं। आत्मा परमात्मा की विवेचना करने वाले दर्शन और शास्त्र उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर पाते हैं। वे कहते हैं कि शास्त्रों का अध्ययन व्यर्थ है, उससे अधिक धर्म की चर्चा व्यर्थ है, तथाकथित शाश्वत् पौराणिक चर्चा भी विफलता को ही प्राप्त हो गयी है।[गअप] कवि का मानना है कि कृत्रिम धार्मिक भावना अपने लोगों के प्रति संवेदन रहित बना देती है। ऐसी स्थिति में धार्मिक आडम्बरों की प्रधानता हो जाती है और मानवमात्र के प्रति भावना गौण हो जाती है। किन्तु कवि मानव मात्र को ही प्रधानता देता है। इसीलिए कवि निदाघलहरी में कहता है–

तृणानां प्रेषयन् राशीर्गौभ्यो यानेन सत्त्वरम्।
म्रियन्तेऽत्र नराः क्षुद्भ्य इति किं नैव पश्यति।।[गअपप]

कवि रोटिकालहरी में रोटी जो एक भौतिक पदार्थ है, को सभी दर्शनों के मूल में स्थापना करते हैं। वे कहते है– नैयायिक लोग जो प्रमा को ही उत्तम मानते हैं, मीमांसक लोग जो अर्थवाद को महत्त्व देते हैं, वेदान्ती लोग जो ब्रह्म की उपसना करते हैं उन सबका मूल तो रोटी ही है।[गअपपप] कवि के अनुसार सुख से रोटी का स्वाद लेना भुक्ति है। स्वतंत्रता पूर्वक उसे पाया जाना ही मुक्ति है और कैवल्यधाम भी यही है कि सारे मानव रोटी पा रहे हैं–

भुक्तिरेषा सुखं रोटिका स्वादिता
मुक्तिरेषा गृहीता स्वतन्त्रं तथा।
धाम कैवल्यभावस्य तत् केवलं
रोटिका गृह्यते मानवैः सा समम्।।[गपग]

इस प्रकार अचार्य राधवल्लभ त्रिपाठी के काव्यों में भौतिकवाद का मनोरम वर्णन प्राप्त होता है।

(3) वर्ग–संघर्ष की अवधारणा–

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के लहरीकाव्य–संग्रह 'लहरीदशकम्' में दो वर्गों का अस्तित्व नजर आता है। पहला वर्ग किसानों मजदूरों आदि श्रमिकों का है जिसे कवि ने जनता की संज्ञा दी है और दूसरा वर्ग नेताओं, सामन्तों, धनिकों, धर्म के ठेकेदारों आदि का है। इन दोनों वर्गों में संघर्ष का वर्णन भी प्राप्त होता है। अन्ततः शोषित वर्ग स्वयं को शोषणविहीन बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

कवि पूर्व में श्रमिकवर्ग की शोषित स्थिति का वर्णन करता है। वह कहता है कि जिस प्रकार पांचाली की दुःशासन के द्वारा सभी वस्तुएँ छीनी जा रही थी वैसे ही श्रमिक वर्ग का शोषण नेता, सामन्त आदि वर्ग करता है। श्रमिक वर्ग से ग्रास तक झटक लिया जा रहा है। आरम्भ से लेकर अशुभ नर पशुओं के द्वारा छली गयी, कुटिल नीति के कारण यह जनता मारी गयी, रोंदी गयी और कष्टजनक दशा को पहुँचा दी गयी है–

पांचाल्या इव कृष्यते हतधिया दुःशासनेनानिशं
यस्या वस्तुमपीह चैव वदनाद् ग्रासस्तथा च्छिद्यते।

आमूलं छलिताऽशुभैनृपशुभिः कौटिल्यनीत्या च या
सेवैयं जनता विदलिता कष्टां दशां प्रापिता।[गग]

कवि शोषित वर्ग के साथ खड़ा है। शोषक वर्ग को कवि 'वजूके' की संज्ञा देते हैं, जो भीतर से खोखला और बाहर से डरावना होता है ठीक उसी प्रकार गरीबों को सताने वाले आततायी लोग भीतर से कायर और खोखले होते हैं तथा बाहर से आतंककारी होते हैं।[गगप] कवि शोषित वर्ग की प्रतिक्रिया का वर्णन करता है। अत्याचारों से खिन्न होकर इसके विरुद्ध जनता को जूझने के लिये तैयार बताते हैं।[गगपप] इनका विश्वास है कि यह जनता शोषक वर्ग के तंत्र को समाप्त करने में सफल होगी। कवि कहता है कि दुःख के समुदाय को सह–सह कर आविर्भूत हुए तेज वाला समय आने पर वही जनता शार्दूलविक्रीडित करती है–

साहं साहमतीव दुःखनिचयं चाविर्भवत्तेजसा।
कालं प्राप्य करोति सैव जनता शार्दूलविक्रीडितम्।।[गगपपप]

कवि का विचार है कि तथाकथित नेता घमंडी, विनय से च्युत आदि नीचों के द्वार या धरती संभाली नहीं जा रही है, यह नीचे धसती जा रही है। इसको तो जनता ही अपने पराक्रम से अब उबारे।[गगपअ]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यों में मार्क्सवाद का समर्थन पूर्ण रूप से दिखयी देता है। वे जहाँ पीड़ित वर्ग की दुर्दशा का वर्णन करते हैं, पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते है, आशा व्यक्त करते हैं कि जनता सभी दुर्दाम्भिकों को नष्ट कर देगी और साम्य का शासन स्थापित करेगी वहाँ कवि की समाजवादी और साम्यवादी भावना उजागर होती है। कवि जब धर्म की अन्धी परम्पराओं को स्वीकार नहीं करता बल्कि पंचतत्त्व निर्मित जनता को सबका मूल मानते हैं, और भौतिक पदार्थ रोटी की सुखपूर्वक प्राप्ति को मुक्ति तथा सर्वजनों का एक साथ रोटी ग्रहण करना कैवल्य बताते हैं तब कवि की भौतिकवादी भावना उद्घाटित होती है। कति जब नेताओं, सामन्तों, पूंजीपतियों, धनिकों आदि के द्वारा जनता को छलने का वर्णन करते हैं, और श्रमिक वर्ग अर्थात् जनता को शोषणविहीन स्थिति को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बताते हैं, तब कवि के काव्यों में वर्ग संघर्ष की अवधारणा प्राप्त होती है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी कार्ल मार्क्स के समान श्रमिक वर्ग के पक्षधर हैं तथा उन्हें सम्यक् शोषणविहीन स्थिति में लाना चाहते हैं। उनके अनुसार देश में समाजवाद के नाम पर पूंजीवादी का बोलबाला जनता के साथ हो रहा छलावा है जो देश के लिए घातक है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मार्क्स वाद के विभिन्न सिद्धान्त आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के काव्यों में व्यापक रूप से दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

[i] आधुनिक राजनीतिक विचारक, चन्द्रदेव प्रसाद, अटलांटिक प्रकाशन, पृ. सं. 125

[ii] वही, पृ. सं. 119

[iii] वही, पृ. सं. 117

[iv] लहरीदशकम्, राधवल्लभत्रिपाठी, जनतालहरी,1

[v] वही, 2
[vi] लहरीदशकम् वसन्तलहरी, 53
[vii] लहरीदशकम् जनतालहरी, 12
[viii] लहरीदशकम् प्रवृडलहरी, अन्तिम पद्य
[ix] लहरीदशकम् रोटिकालहरी, 13
[x] वही, 24–25
[xi] लहरीदशकम् जनतालहरी, 25
[xii] वही, 42
[xiii] वही, 2
[xiv] वही, 3
[xv] वही, 6
[xvi] वही, 4
[xvii] लहरीदशकम् निदाघलहरी, 9
[xviii] लहरीदशकम् रोटिकालहरी, 42
[xix] वही, 47
[xx] लहरीदशकम् जनतालहरी, 21
[xxi] वही, 20
[xxii] वही, 25
[xxiii] वही, 39
[xxiv] वही, 44